अध्याय–6

पृथ्वीराज की आँखें

– डॉ. रामकुमार वर्मा

{महाकवि चंद ने अपने ग्रंथ पृथ्वीराज रासो के छियासठ समयो (बड़ी लड़ाई समयो) में पृथ्वीराज का कैद होकर गोर जाना लिखा है। सड़सठवें समयो (बाणबेधसमयो) में पृथ्वीराज की धनुर्विद्या का वर्णन और अंत में पृथ्वीराज के शब्द बेधी बाण से शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी का वध होना लिखा है। इसी दृष्टिकोण को सामने रखकर इस नाटक की रचना की गई है}

<u>पात्र–परिचय</u>

पृथ्वीराज चौहान – दिल्ली और अजमेर का राजा

चंद – महाकवि और पृथ्वीराज का मित्र

शहाबुद्दीन गोरी – गोर का सुल्तान (1192)

अख्तर – सिपाही

काल – तराइन के युद्ध के उपरान्त

(संध्या का समय। गोर के किले में पृथ्वीराज कैद है। वह पैंतालीस वर्ष का प्रौढ़ व्यक्ति है। उसके शरीर से शौर्य अब भी फूट रहा है। चढ़ी हुई मूँछें अैर रोबीला चेहरा। उसके हाथ साँकलों से बँधे हैं। अब वह घुटनों पर दोनों हाथ झुकाये बैठा है। साँकल का एक छोर उसके पैरों तक लटक रहा है, जो हाथों के संचालन मात्र से ही झूलकर शब्द करने लगता है। उसके बाल बिखरे हुए हैं। दाढ़ी बढ़ आई है। वस्त्र बहुत मैले हो गये हैं। कहीं–कहीं जलने के निशान भी पड़ गये हैं। घुटनों के पास फटा हुआ चूड़ीदार पाजामा है, जिस पर रक्त के धब्बे दिखाई पड़ रहे हैं, पैर में पुराना जूता है। पानी बरस चुका है, इसलिए वायु में कुछ शीतलता आ गई है।

दाहिनी ओर महाकवि चंद बैठा हुआ है। उसकी आयु पृथ्वीराज की आयु के लगभग है। उसके कपड़े साफ सुथरे हैं। वेश में सादगी है, पर मुख पर दुःख की रेखाएँ अंकित हैं। वह पृथ्वीराज को

करुणापूर्ण आँखों से देख रहा है। कुछ क्षणों तक दोनों स्थिर बैठे रहते हैं। बोलते हैं तो बोलने के साथ–साथ हिलने से साँकल बज उठती है।)

पृथ्वीराज–मत पूछो। कुछ मत पूछो। जिस क्षण ने पृथ्वीराज को पृथ्वीराज न रहने दिया, उसकी–उस निर्दय क्षण की बात मत पूछो। बड़ी कठिनाई से उस कष्ट को भुला सका हूँ चन्द! आखेट करते समय व्याघ्र के पंजे भी मुझे इस तीक्ष्णता से नहीं लगे। आह!

(सिर झुकाकर सोचता है)

चंद–(दयार्द्र होकर) महाराज, यह आपका शरीर, जिससे शौर्य पसीना बन कर बहा करता था, आज इतना निस्तेज है। क्या गोर के आदमी इतने निर्दय होते हैं? एक शक्तिशाली राजा के साथ इतना पशुत्व।

पृथ्वीराज–पशुत्व ? ओह चंद! यदि उस समय तुम होते तो काँप जाते। तुम्हारी लेखनी कुंठित हो जाती, मनुष्यता थर्रा उठती। आश्चर्य है, धरती माता यह सब कृत्य कैसे देखती रही। और इस पृथ्वीराज के शरीर पर इतना अत्याचार देख लेने पर भी वह माता कहला सकती है? कवि, घोषणा कर दो कि यह माता नहीं पिशाचिनी है।

(भावोन्मेष में काँपता है।)

चंद–महाराज!

पृथ्वीराज–(उसी भावावेश में) और यह हवा? इस समय शरीर से लगकर सुख देना चाहती है?

(घृणा प्रदर्शन)

चंद–यह उन्माद?

पृथ्वीराज–(तीव्रता से) चुप रहो, चंद! इतना सहने के बाद भी मैं जीवित हूँ, आश्चर्य है। भयंकर रात थी। प्रेयसी संयोगिता के बिना वह रात हब्शिनी बन गयी थी। अंधकार जैसे मेरी ओर घूर रहा था, मेरी आँखों में घुसकर। इतने में चार मशालें दिखलाई दीं। उनकी लौ इधर उधर झूम रही थी। जैसे अंधकार रूपी दैत्य की जिह्वाएँ हों। (सोचते हुए) पाँच आदमी सामने आये। चार मशालची और एक उनका सरदार। सरदार के हाथ में एक छुरा था। वह बोला कैदी, तेरी आँखें निकाली जायेंगी।

(शैथिल्य प्रदर्शन)

चंद–यह धृष्टता? (भौंहे सिकोड़ता है।)

पृथ्वीराज–(उसी स्वर में) मैंने कहा, कैद करने के बाद यह जुल्म? मनुष्यता में रहना सीखो खुदा के बंदों! जान से मार डालो, पर एक राजा की इज्जत रहने दो! चंद, उसने कहा, 'चुप रह'।

(गहरी साँस लेता है)

चंद–(तड़फकर) क्या कहा? 'चुप रह'?

पृथ्वीराज–हाँ यही कहा। दिल्ली और अजमेर को भौंह के संकेत से नचाने वाले चौहान को ये शब्द भी सुनने पड़े। यदि दिल्ली में यह शब्द मेरे कानों में पड़ते तो..... तो..... हाय जबान लड़खड़ा रही है। बोला भी नहीं जाता।

चंद–(दुःख से) आह, आज महाराज पृथ्वीराज चौहान की यह दशा?

पृथ्वीराज–(अपने ही विचारों में) फिर.... फिर सबने मिलकर मुझे पकड़ लिया। मेरे हाथ पाँव बँधे थे। मैं बिल्कुल असहाय था। चंद, उस समय जीवन में पहली बार, केवल पहली बार मैंने अपनी आँखों को आँसुओं से भरा पाया!

चंद–(करुणा से) महाराज आपका गला सूख रहा है। पानी पी लीजिये।

पृथ्वीराज–(चंद की बातें न सुनकर अपने ही विचारों में, मानों वह दृश्य उनकी आँखों में झूल रहा था) दो गरम सूजे मेरी आँखों के पास लाये गये। मुझे उनकी गरमी धीरे–धीरे पास आती हुई जान पड़ी। उस समय मुझे याद आया संयोगिता ने एकबार इसी प्रकार धीरे–धीरे अपने मुख को समीप लाते हुए इन्हीं आँखों का चुंबन किया था। उस समय उन अधरों की मादकता मेरे पास इसी प्रकार धीरे–धीरे आती हुई जान पड़ी थी।

चंद–(अधीर होकर) अब आगे मत कहिए, मैं नहीं सुन सकूँगा.....

पृथ्वीराज–एक क्षण में उन्होंने उन गरम सूजों से मेरी पलकों को छेद डाला और मेरी पुतलियों को जलाकर.....

चंद–(अधीर होकर) आगे न सुन सकूँगा! यह क्रूरतापूर्ण अत्याचार.....

पृथ्वीराज–(शांत होकर) अच्छा, मत सुनो। पर इतना जान लो कि जिन आँखों में संयोगिता की मूर्ति अंकित थी, वे आँखें अब नहीं रहीं। जिन संतृप्त आँखों में सौन्दर्य–सुधा पान की मादकता थी, वे आँखे अब नहीं रहीं।

चंद–(दृढ़ता से) और जिन आँखों ने क्रूर राजाओं को निस्तेज कर दिया, जिन आँखों ने रक्त–वर्ण होकर रणक्षेत्र में लोहा बरसा दिया, वे आँखें?

पृथ्वीराज–वे आँखें? उफ, वे आँखें तो जयचंद के विश्वासघात की आग में जल गई। कवि, क्या रेवा तट के सताईसवें समय की याद दिलाना चाहते हो? इस समय मेरे सामने तुम्हारा 'रासो' कवि की कल्पना का साधारण अभ्यास मात्र है। अब तो यह शरीर पृथ्वीराज चौहान नहीं रह गया।

चंद–महाराज.....।

पृथ्वीराज–(क्रोध से) बार–बार मुझे महाराज क्यों कह रहे हो? मैं एक कैदी हूँ। (साँकल बज उठती है)

चंद–पर, मेरे लिए नहीं। फिर आपका शरीर कैदी है, आत्मा? मुझे विश्वास है, आपकी आत्मा कैदी नहीं हो सकती। आप वही पृथ्वीराज चौहान हैं। उस समय भारत में थे, इस समय यहाँ। शेर पिंजड़े में बंद रहने पर भी शेर ही कहलाता है।

(गर्व की मुद्रा)

पृथ्वीराज–यदि शेर को शेर ही रखना चाहते हो, तो चंद कहाँ है तुम्हारी तलवार? फाड़ दो मेरा यह वक्षस्थल। पृथ्वीराज के गौरव से गिरे हुए इस प्राणी को अब प्राण की आवश्यकता नहीं। इस जीवन का एक–एक क्षण तुम्हारी तलवार की धार से बहुत पैना है। (साँकल का शब्द) लाओ, अपनी तलवार।

चंद–तलवार? वह तो मुहम्मद गोरी के हुक्म से दरवाजे पर ही मेरे हाथों से ले ली गई, मुझसे कहा गया कि मैं उसे भीतर नहीं ले जा सकता। वह तो दरवाजे पर ही ले ली गई।

पृथ्वीराज–(दाँत पीसकर) ले ली गई? और हाथ? वे भी गोरी ने वहीं काट लिए। नीच! नरकी! (ठहरकर) चन्द तुम प्राणहीन होकर मेरे पास आये हो। जानते हो, वीरों के प्राण का नाम है तलवार!

चंद–जानता हूँ पर सुल्तान का हुक्म।

पृथ्वीराज–सुल्तान का हुक्म? गोरी का? और तुम उस हुक्म के आज्ञाकारी सेवक हो?

चंद–(सँभलकर) किन्तु–किन्तु यह कटार (छिपी हुई कटार निकालकर) मैंने आत्मा की तरह छाती में छिपाकर रखी, मैं इससे अपना काम कर सकता हूँ। (तनकर खड़ा हो जाता है।)

पृथ्वीराज–(बड़ी प्रसन्नता से) मेरे अच्छे चंद, महाकवि मित्र, प्यारे, मेरे जीवन की शमशान के समान भयानक आग शांत कर दो, लाओ, तुम्हारा माथा चूमूँ। हाय, मैं देख भी नहीं सकता, तुम्हारा माथा कहाँ है?

चंद–महाराज। विचलित न होइए। मैं चौहान को इस दैन्यावस्था में नहीं देख सकता? मैं अभी मृत्यु.....

पृथ्वीराज–(बात काटकर) हाँ, देर न करो। देर न करो। मेरे चंद महाकवि मित्र .....

चंद–महाराज, मैं देर न करूँगा। यह छुरी छाती में घुसकर शीघ्र ही इस दुःख से मुक्त कर देगी। लीजिए चूमता हूँ यह कटार। (कटार चूमता है) लाइए, अंतिम बार आपके चरण स्पर्श कर लूँ। (चरण स्पर्श करता है।) प्रणाम। मैं आप पर नहीं, अपने शरीर पर आघात करूँगा, क्योंकि मैं आपकी यह दशा नहीं देख सकता। (कटार, ऊपर तानता है।)

पृथ्वीराज–(विचलित होकर) नहीं नहीं।

(जंजीर बज उठती है।) मेरे चंद, यह नहीं हो.....

(चंद आत्मघात करना ही चाहता है कि पीछे से मुहम्मद गोरी निकल कर, हाथ रोककर, कटार छीन लेता है। गोरी पैंतीस वर्ष का युवक है। शरीर गठा हुआ। मूँछे तनी हुई। वह फौजी वेश में है। कमर में तलवार है।

गोरी–(हँसकर) हंअ, सरदार, जिन्दगी इतनी नाचीज है? यह दुनिया इसी तरह चलती है, और चलती रहेगी। तुम इतने मायूस क्यों होते हो? भोले सरदार? क्या तुम जानते हो कि मेरे घर में क्या हो रहा है इसका मुझे पता नहीं? गोर का सुल्तान दीवारों में अपनी दृष्टि रखता है।

(चंद मलिन दृष्टि से गोरी को देखता है।)

गोरी–(उत्साह से) पर वाह? तुम कितने वफादार हो? अपने मालिक की यह हालत न देख सके सरदार? अपनी वफादारी का इनाम माँगो। (चंद चुप रहता है।)

गोरी–कुछ नहीं? बोलो? अभी तो बोल रहे थे। अंधे का पैर चूम रहे थे उसकी आँखे नहीं चूमते? अहा, कैसी खूबसूरत हैं।

(व्यंग्य दृष्टि)

चंद–खूबसूरत? उस शेर की आँखें अब उसके दिल में है।

गोरी–दिल में? बहुत अच्छा। यह शेर शायद तुम्हें उन्हीं आँखों से देख रहा है। पृथ्वीराज तू मुझे किन आँखों से देख रहा है।

पृथ्वीराज–(स्थिर भाव से) गोरी तू देखने लायक भी नहीं है। अपनी अंधी आँखों से अगर मैं देख सकता, तो भी मैं तुझे देखना पसंद न करता। अच्छा हुआ तूने इनका उजाला ले लिया (ठहरकर) मैं तुझे क्या देखूँ। तू भूल गया, उस बार मेरे तीरों से तेरी टोपी उड़ी थी। उस वक्त तुझे पूरी नजर से देखा था। तू भूल गया? मुझे दुःख है, सरदारों के कहने में आकर मैंने तेरा पीछा नहीं किया। मेरे तीर तेरे शरीर को बेध सकें..... (निराशा)

गोरी–(लापरवाही से) खैर, तेरे तीर न सही, मेरे मामूली सूजे तेरी आँखो को बेध सके। एक ही बात है पर तेरे तीर.....

चंद–(बीच ही में) सुलतान, पृथ्वीराज के तीर–पृथ्वीराज आवाज पर तीर मारता है।

गोरी–(आश्चर्य से) आवाज पर। मारता होगा, पर अब तो अन्धा है।

चंद–सुलतान, आवाज पर तीर मारने के लिए आँख की जरूरत नहीं होती।

गोरी–सच? (आश्चर्य प्रकट करता है)

चंद–बिल्कुल सच। कल अपने अन्धे वीर का यह तमाशा देखियेगा। यही मेरा इनाम समझें।

गोरी–(पृथ्वीराज की ओर देखकर) शाबाश कैदी, (चंद से) अच्छा चंद! कल तुम्हारे खातिर इस अंधे की तीरंदाजी भी देख लूँगा। अच्छा अब देर हो रही है। तुम मेरे साथ चल सकते हो? खुदकुशी पर तुम से एक कहानी कहनी है। कैदी से मिलने का वक्त अब पूरा हो गया अब एक क्षण भी नहीं।

चंद–यह बतलाना तो सिपाही का काम है, आपका नहीं, आप तो सुलतान हैं।

गोरी–तुम हमेशा मुझे सुलतान के बजाय सिपाही समझो, सिर्फ सिपाही।

(दृढ़ता से खड़ा होता है)

चंद–(पृथ्वीराज से) अच्छा, तो अब चलता हूँ। प्रणाम! महाराज पृथ्वीराज। (प्रणाम करता है।)

गोरी–(व्यंग्य से) महाराज (महा पर जोर देकर) पृथ्वीराज। हा–हा–हा (अट्टहास करता है)

चंद–(जोर से) अख्तर?

(अख्तर सिपाही का प्रवेश। पूरी वर्दी में। तीस वर्ष का जवान ज्ञात होता है। मुस्तैदी से प्रवेश। आकर सलाम करता है।)

गोरी–महाराज (महा पर जोर देकर) पृथ्वीराज की आँखों में आज रात को नींबू और मिर्च पड़ेगा। रात के ग्यारह बजे। कितने बजे?

उत्तर–ग्यारह बजे।

गोरी–क्या?

अख्तर–नींबू और मिर्च।

गोरी–हाँ, नींबू और मिर्च। समझे।

पृथ्वीराज–(दृढ़ता से उसी स्वर में) नींबू के रस में नमक मिलाना होगा समझे।

गोरी–(मुस्कुराकर सिपाही से) इसकी मुराद पूरी करो। (पृथ्वीराज से) कैदी। कल सुबह मिलूँगा। रात को अपनी आँखों में नमक–मिर्च डाल कर आराम से सोना। (तनकर खड़ा होता है।)

पृथ्वीराज–बहुत अच्छा। गोरी मुझसे सलाम करके जाना। मैं बादशाह हूँ।

गोरी–(व्यंग्य से मुस्करा कर) बहुत अच्छा बादशाह। सलाम।

(चंद को साथ लेकर गोरी गर्व से प्रस्थान करता है। पृथ्वीराज स्थिर भाव से बैठा रहता है।)

अभ्यास के लिए प्रश्न

प्र. 1 पृथ्वीराज की प्रेयसी का नाम था –

(क) पद्मावती (ख) चन्द्रावती

(ग) संयोगिता (घ) संगीता

प्र.2 ''कवि घोषणा कर दो कि यह माता नहीं पिशाचिनी है।'' पृथ्वीराज के इस कथन से उसका कौनसा मनोभाव व्यक्त हुआ है –

(क) वेदना (ख) ग्लानि

(ग) घृणा (घ) क्रोध

प्र. 3 मुहम्मद गोरी पराजित सम्राट पृथ्वीराज को बंदी बनाकर कहाँ ले गया –

(क) कराची (ख) ईरान

(ग) गोर (घ) कंधार

प्र. 4 'चंद तुम प्राणहीन होकर मेरे पास आए हो' पृथ्वीराज ने कहा क्योंकि चन्द.....–

(क) निराश मन होकर आया था (ख) सुलतान से छिपकर आया था

(ग) बहुत उदास होकर आया था (घ) तलवार विहीन होकर आया था

प्र. 5 पृथ्वीराज चौहान कहाँ का सम्राट था?

प्र. 6 पृथ्वीराज चौहान के युद्ध में हारने का मुख्य कारण क्या था?

प्र. 7 चंद बरदाई कौन था?

प्र. 8 मुहम्मद गोरी ने बंदी पृथ्वीराज के साथ कैसा व्यवहार किया?

प्र. 9 'शेर पिंजड़े में बन्द रहने पर भी शेर ही कहलाता है।' ये शब्द किसने, किससे और कब कहे थे?

प्र. 10 ''मेरे अच्छे चन्द, महाकवि मित्र, प्यारे, मेरे जीवन की शमशान के समान भयानक आग शांत कर दो।'' 'पृथ्वीराज के जीवन की शमशान के समान भयानक आग कौनसी थी?

प्र. 11 ''कुछ नहीं? बोलो? अभी तो बोल रहे थे। अंधे के पैर चूम रहे थे, उसकी आँखे नहीं चूमते? अहा कैसी खूबसूरत आँखें हैं।'' पंक्तियों में गोरी का कौनसा भाव व्यक्त हुआ है?

प्र. 12 चंद बरदाई कृत पृथ्वीराज चौहान को लेकर लिखे महाकाव्य का नाम लिखिए।

प्र. 13 चंद बरदाई बंदीगृह में पृथ्वीराज से मिलने के लिए अपनी तलवार क्यों नहीं ले जा सका ?

प्र. 14 पृथ्वीराज किस विद्या में सिद्धहस्त था ?

प्र. 15 चंद कटार निकाल आत्महत्या करना चाहता है। चंद के द्वारा ऐसा चाहने का कारण स्पष्ट कीजिए।

प्र. 16 गोरी ने पृथ्वीराज को बंदीगृह में किस–किस प्रकार की यातनाएँ दीं? लिखिए।

प्र. 17 गोरी की कैद में बंदी पृथ्वीराज चौहान की मनःस्थिति का वर्णन कीजिए।

प्र. 18 गोरी आत्महत्या के लिए उद्यत चंद के हाथों से कटार छीन लेता है तथा चंद से जो कुछ कहता है। उन विचारों को अपने शब्दों में लिखिए।

प्र. 19 ''मैंने कहा..... मनुष्य जैसे रहना सीखो, खुदा के बंदो। जान से मार डालो, पर एक राजा की इज्जत रहने दो।'' ये शब्द किसने, किसको और क्यों कहे थे?

प्र. 20 ''उस निर्दय क्षण की बात मत पूछो। बड़ी कठिनाई से उस कष्ट को भुला सका हूँ।'' वह कौन सा कष्ट था जिसे पृथ्वीराज नहीं भुला पा रहा था?

प्र. 21 चंद यदि कटार लेकर आत्महत्या कर लेता तो एकांकीकार को कथा में क्या मोड़ देना पड़ता? अपनी कल्पनाशक्ति से लिखिए।

प्र. 22 चन्द गोरी को अपने ''अन्धे वीर'' का कौनसा तमाशा दिखाना चाहता था और क्यों?

प्र. 23 ''दिल्ली और अजमेर को भौंह के संकेत से नचाने वाले चौहान को ये शब्द भी सुनने पड़े।'' ऐसे कौनसे, किसके शब्द सुनने पड़े?

प्र. 24 गोरी की कैद में बंदी पृथ्वीराज की दशा का वर्णन कीजिए।

प्र. 25 'पृथ्वीराज की आँखे' एकांकी लिखने के पीछे निहित एकांकीकार के उद्देश्य को सविस्तार लिखिए।

प्र. 26 पृथ्वीराज चौहान एवं मुहम्मद गोरी की चारित्रिक विशेषताओं को लिखते हुये दोनों के चरित्र की तुलना कीजिए।

प्र. 27 मुहम्मद गोरी के स्थान पर यदि पृथ्वीराज ने गोरी को कैद कर लिया होता तो पृथ्वीराज गोरी के साथ कैसा व्यवहार करता? अपने उत्तर की पुष्टि कल्पना एवं तर्क से कीजिए।

प्र. 28 मुहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज के साथ जो क्रूर व्यवहार किया, क्या वह उचित था? इतिहास सम्मत किसी ऐसी घटना का उल्लेख कीजिए, जिसमें विजेता ने किसी वीर राजा के बंदी हो जाने पर भी उसके साथ इसके विपरीत व्यवहार किया हो।

पाठ के आसपास

विद्यालय में इस एकांकी का अभिनय कीजिए।

कठिन शब्दार्थ

प्रौढ़– तीस से पचास वर्ष की आयु का व्यक्ति / आखेट– शिकार / व्याघ्र– शेर / सूजे – शलाखें / पिशाचिनी– राक्षसी / प्रेयसी– प्रेमिका / निस्तेज– बिना तेज के/मुरझाया हुआ / रक्तवर्ण– लालरंग / दैन्यावस्था– दयनीय अवस्था / नाचीज– मामूली / मायूस– दुःखी / अट्टहास– हँसना / मुस्तैदी– जल्दी से / प्रस्थान– जाना / हुक्म– आदेश / थर्राना– काँपना / साँकल– लोहे की जंजीर / मुराद– इच्छा / वफादारी– ईमानदारी / जबान– जिह्वा आवाज / जुल्म– अत्याचार